|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 19. Oktober 2025 | | | |
| **29. Sonntag im Jahreskreis C** | | | |
| Erste Lesung: Ex 17,8-13; Zweite Lesung: 2 Tim 3,14-4,2; Evangelium: Lk 18,1-8 | | | |
|  |  |  | |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2 |  | |
|  | GL 423, 1+3! | Wer unterm Schutz des Höchsten steht | |
|  | GL 424, 1+5! | Wer nur den lieben Gott lässt walten | |
|  |  |  | |
| Kyrie: | GL 156 | Kyrie | |
|  | GL 437, 1-4 | Meine engen Grenzen | |
|  |  |  | |
| Gloria: | GL 714 | Ehre dir, Gott im heilgen Thron | |
|  |  |  | |
| Antwortgesang: | Psalm 121, 1-8 |  | |
|  | Kehrvers: |  | |
|  | GL 49, 1 | Jubelt Gott zu | |
|  | GL 67, 1 | Der Herr behütet dich | |
|  | oder |  | |
|  | GL 143, 2+3 | Dein Name, Herr, ist unser Hort | |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 3 | |  |
|  | Vers: | |  |
|  | *Lebendig ist das Wort Gottes und kraftvoll.* | | |
|  | *Es richtet über die Regungen und Gedanken der Herzen.* | | |
|  |  | | |
| Credo: | GL 793 | | Dich, o Gott, wir Vater nennen |
|  |  | |  |
| Gabenbereitung: | GL 416, 1+2 | | Was Gott tut das ist wohlgetan |
|  |  | |  |
| Sanctus: | GL 718 | | Heilig |
|  |  | |  |
| Agnus Dei: | GL 133 | | Lamm Gottes |
|  |  | |  |
| Danksagung: | GL 414, 1+2!-5 | | Herr, unser Herr |
|  | GL 453, 1-4 | | Bewahre uns, Gott |
|  |  | |  |
| Schluss: | Marienlied | |  |